पं दीनदयाल उपाध्याय के बारे में चयनित विचार

भारतीय जनसंघ कार्यसमिति

भारतीय जनसंघ कार्यसमिति की बैठक आज एक भयानक राष्ट्रीय दुर्भाग्य की कराल छाया में हो रही है। जनसंघ की स्थापना के बाद यह पहला ही अवसर है जब कार्यसमिति का मार्गदर्शन करने के लिए श्री उपाध्याय हमारे बीच में नहीं हैं। जिन्हें काल के क्रूर हाथों ने अपने एक क्रूर अप्रत्याशित प्रहार से हमारे मध्य से उठा लिया है और आज हम उनकी मृत्यु पर शोक प्रकट करने और उनकी पावन स्मृति में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए एकत्रित हुए हैं। श्री उपाध्याय जी एक महान देशभक्त, कुशल संगठनकर्ता, मौलिक विचारक, दूरदर्शी राजनीतिज्ञ और साहित्यकार थे। सादा जीवन और उच्च विचार की जीती जागती प्रतिमा श्री उपाध्याय भारत की संस्कृति के प्रतिनिधि और संदेशवाहक थे। उनका संपूर्ण जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित था। उनके देहावसान से सार्वजनिक जीवन की जो क्षति हुई है, वह अपूरणीय है। उनके बिना जनसंघ की कल्पना भी कठिन है। जब से जनसंघ के संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने उन्हें महामंत्री के पद पर मनोनीत किया, वे जनसंघ के के प्रेरणा स्रोत और संगठन के आधार बने रहे। थोड़े ही वर्षों में देश के राजनीतिक जीवन में जनसंघ ने जो आज प्रमुख स्थान प्राप्त किया है, उसका श्रेय यदि किसी एक व्यक्ति को है तो वह श्री दीनदयाल उपाध्याय जी को जाता है। उनका नि:स्वार्थ जीवन, उनकी आदर्शवादिता, उनका अनुशासन, सबको साथ लेकर चलने की क्षमता लाखों कार्यकर्ताओं के लिए उदाहरण बन गई और यह उन्हें आगे बढ़ते रहने के लिए निरंतर प्रेरणा देती रहेगी।

जिन परिस्थितियों में उपाध्याय जी की मृत्यु हुई वह हृदय विदारक है तथा गंभीर रूप से चिंताजनक है। जिस तरह उनका शव मुगलसराय रेलवे प्लेटफार्म से थोड़ी दूर पड़ा पाया गया, वह संदेहों और आशंकाओं से परिपूर्ण है। जो तथ्य अभी तक उपलब्ध हुए हैं, वे इस बात की ओर संकेत करते हैं कि उनकी मृत्यु किस दुर्घटना के कारण नहीं हुई। अपितु यह हत्या का स्पष्ट मामला है। यह तो एक उच्च स्तरीय और विस्तृत जांच से ही पता चल सकता है कि यह किस उद्देश्य से किया गया और उसके लिए कौन उत्तरदायजी है? उत्तर प्रदेश सरकार ने संपूर्ण कांड की जांच का आदेश दिया है। किंतु कार्यसमिति यह अनुभव करती है कि चूंकि इस दु:खद कांड से रेलवे विभाग भी संबंधित है। अतः केंद्र सरकार को भी स्वतः से इस मामले की छानबीन करनी चाहिए। भारतीय जनसंघ दीनदयाल जी के जीवन उद्देश्यों के प्रति अपने समर्पित करता है।

मुझे श्री दीनदयाल उपाध्याय की मृत्यु की खबर सुनकर गहरा आघात लगा। दिवंगत नेता के परिवार के सदस्यों के प्रति मेरी गहरी सहानुभूति है।

डॉ. जाकिर हुसैन (भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति)

श्री उपाध्याय भारत माता के महान पुत्र थे। उनकी मृत्यु से मुझे गहरा दुख हुआ है। उनके निधन से एक बहुत बड़ा राष्ट्रवादी एवं कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति भारत ने खो दिया।

श्री वी.वी. गिरी, तत्कालीन उपराष्ट्रपति

मुझे श्री उपाध्याय जी की मृत्यु की खबर सुनकर गहरा आघात पहुंचा है। श्री उपाध्याय देश के राजनीतिक जीवन में प्रमुख भूमिका अदा कर रहे थे। उनकी ऐसी दु:खद परिस्थितियों में असामयिक और अप्रत्याशित मृत्यु से उनका कार्य अधूरा रह गया है। जनसंघ और कांग्रेस के बीच मतभेद चाहे जो हो मगर श्री उपाध्याय सर्वाधिक सम्मान प्राप्त नेता थे और उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन देश की एकता एवं संस्कृति के लिए समर्पित कर दिया था।

श्रीमती इंदिरा गांधी, तत्कालीन प्रधानमंत्री

स्वर्गीय दीनदयाल जी से मेरा प्रत्यक्ष परिचय नहीं था। परंतु जिस भाव से वे देश की सेवा कर रहे थे उससे परिचित था। भारतीय संस्कृति में, धर्म में तथा देश की अखंडता-एकता में उनकी बहुत श्रद्धा थी और वे चाहते थे कि इस देश का विकास भारतीय संस्कृति के अनुसार हो। धर्म, जो हमारी संस्कृति की बुनियाद है, वह प्रबल बने। इन्हीं आदर्शों की पूर्ति के लिए वे जीवन भर लगे रहे। इसी ध्येय की पूर्ति के लिए उन्होंने अपनी सारी शक्ति को लगा दिया। संसार (गृहस्थी) भी नहीं बसाई। मैं समझता हूं कि राष्ट्र सेवा के भिन्न-भिन्न मार्गों पर चलते हुए मत भिन्नता आ सकती है। परंतु मतों में अंतर होने पर भी परस्पर सज्जनता का बर्ताव करना आवश्यक होता है। तभी समाज का विकास संभव है और दीनदयाल जी इस जनता के प्रतीक थे। इस प्रकार के उदार जनसेवक, अनन्य राष्ट्रभक्त, निष्ठावान, चारित्र्यशाली

जीवन का हम सभी अनुसरण करें और यह गुण अपने अंदर ला पाएं, तभी देश ऊंचा उठ सकेगा।

श्री मोरारजी देसाई, तत्कालीन उपप्रधानमंत्री

दीनदयाल से मेरा पुराना परिचय था, लंबी दोस्ती थी। इस परिचय का मेरे मन पर कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे एक ऐसी हस्ती हैं कि जो काम वे हाथ में लेंगे, उसे या तो पूरा करेंगे या फिर खुद खत्म हो जाएंगे। उनके व्यक्तित्व में कुछ ऐसी ताकत थी कि वह अपने साथियों को साथ रख सकते थे और यही नहीं अपनी बात को आसानी से उन तक पहुंचा सकते थे। उनके साथी भी यह मानते थे कि वे अपने हैं, इतने अपने हैं कि उनसे कुछ भी कहा जा सकता है। हर बात की उनके यहां सुनवाई होगी। लोग कहते हैं कि वे भोले भाले थे। मैं ऐसा नहीं मानता। भोले-भाले व्यक्ति को तो कोई भी ठग सकता है। किंतु उन्हें ठगना संभव नहीं था। वे सीधे अवश्य थे। जो कहना चाहते थे, विनम्र किंतु सीधे, स्पष्ट ढंग से, सीधी जबान से कह देते थे। यही सीधापन उनके रहन-सहन, खान-पान बोलचाल में भी सदा प्रकट होता था। मैं समझता हूं कि हमारे देश के नेताओं में इस गुण का होना अत्यंत आवश्यक है। इस तरह के गुणों से संपन्न व्यक्ति का इस देश से इतनी जल्दी चले जाना एक बड़ा अभाव ले आया है। यह देश की अत्यंत अपूरणीय क्षति है।

-यशवंत राव चव्हाण, तत्कालीन केंद्रीय गृहमंत्री

गीता में कहा गया है;

तेज: क्षमा धृति: शौचमद्रोहो नातिमानिता।

भवन्ति संपदा देवीमभिजातस्य भारत।।

तेज, क्षमा, धैर्य, बाहर-भीतर की शुद्धि, किसी में भी शत्रुभाव का ना होना, अपने प्रति पूज्यता के अभिमान का अभाव देवी संपदा को प्राप्त हुए पुरुष के लक्षण हैं।

स्वर्गीय उपाध्याय जी भी ऐसी ही दैवी सम्पदा के स्वामी थे। ज्यादा बहस-मुबाहिसे के झगड़े में ना पड़कर शांत भाव से काम में लगे रहते थे। बड़े ही देश प्रेमी थे। यद्यपि वे जनसंघ के प्रधान थे। परंतु वे कभी पार्टीबाजी में नहीं पड़ते थे। ऐसा देश भक्त इतनी जल्दी हमारे बीच से उठ गया, यह बड़े ही दुख की बात है। आज कुछ ऐसी स्थिति हो गई है कि ऐसे लोग चले जाते हैं तो वह जगह पूरी होती नहीं, वह खाली की खाली रह जाती है। इस जगह को भरने के लिए हम अपने जीवनों को ढालें, मोड़ें और उनके जैसा देशप्रेम, सेवाभाव अपने कर्त्तव्य द्वारा प्रकट करें, यही उनके प्रति वास्तविक श्रद्धांजलि होगी।

आचार्य जेबी कृपलानी, तत्कालीन संसद सदस्य

नियति की लीला अगाध होती है। सन 1964 में दिल्ली के रामलीला मैदान में ही पंडित जवाहरलाल नेहरु की मृत्यु पर आयोजित शोकसभा में सर्वप्रथम दीनदयाल जी के दर्शन किए और फिर उसी रामलीला मैदान में उन्हीं को अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित करने का प्रसंग भी मेरे सामने आ गया।

प्रथम दर्शन से पूर्व में अनुमान नहीं लगा पाया था कि वे कितने असाधारण व्यक्ति हैं। उसी अवसर पर जो बातचीत हुई, उसका मेरे मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में जिस प्रकार की सादगी और सरलता के प्रतीक नेता-कार्यकर्ता होते थे, वैसे ही मुझे वे लगे। उसके बाद तो कई बार भेंट हुई। परिचय घनिष्ठ होता गया। उसके बाद तो कई बार भेंट हुई और हर मुलाकात में मुझे उनके जीवन में नए से नए पहलुओं का ज्ञान होता गया। जो सब दृष्टि से श्रेष्ठ एवं कल्याणकारी माने जाते हैं।

गीता में भगवद्प्रिय का लक्षण लिखते हुए इस प्रकार कहा गया है;

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च य:।

हर्षामर्षभयोद्वेग: मुक्तो य: स च मे प्रिय:।।

अर्थात् जिससे लोग परेशान नहीं होते तथा जो लोगों से परेशान नहीं होता और जो हर्ष, क्रोध, भय से मुक्त हो, वही मेरा प्रिय भक्त है।

वस्तुतः इसी कोटि के महामानव थे। कई विषयों पर यद्यपि हमारे मतभेद भी होते थे। किंतु उनका व्यक्तित्व इतना प्रसन्न, इतना उदार, लगन-श्रध्दा इतनी तीव्र कि कभी लगता ही नहीं

था मैं से बाहर के व्यक्ति हैं हम मानते थे कि मार्ग भले ही भिन्न-भिन्न न हो परंतु उपासना सभी उसी राष्ट्रदेव की ही कर रहे हैं।

आज जब देश चारों ओर से संकटों से घिरा है और देशवासी स्वयं भी अपनी भारतीयता को भूल बैठे हैं, उस स्थिति में उनका स्मरण, जिनके लहू की बूंद-बूंद में राष्ट्रीयता भरी थी, जिनका अणु अणु राष्ट्रीय था, हमारे लिए अत्यंत प्रेरणादायक होगा। अधूरे राष्ट्रवाद का चिंतन छोड़ संपूर्ण प्रखर राष्ट्रवाद के पुजारी बनें, यही भारत माता के उस सुपुत्र के जीवन का संदेश है।

श्रीनाथ, तत्कालीन संसद सदस्य

जिन परिस्थितियों में उनका शव पाया गया है, उसकी मैं कल्पना तक नहीं कर सकता। यह रहस्यमय है। श्री उपाध्याय की मृत्यु से मेरा व्यक्तिगत नुकसान हुआ है और देश तथा उसकी एकता व अखंडता को घोर क्षति पहुंची है।

-श्री प्रेमनाथ डोगरा, जम्मू कश्मीर जनसंघ के तत्कालीन अध्यक्ष

मन में बड़ा विषाद छा गया है। क्या हुआ होगा और किस प्रकार से यह मर्मभेदी घटना घटी होगी, इसका तो पता लगाने वाले लगाएंगे। कुछ भी पता लगे, अपने संघ का एकनिष्ठ कार्यकर्ता उठ गया। जीवन के यौवन में आगे अनेक प्रकार से कार्य करने की क्षमता उनकी बढ़ती ही जा रही थी; परंतु अब उस समृद्ध क्षमता का लाभ प्राप्त होने की संभावना नहीं रही। दो-तीन दिन पहले में मिला था। बड़े आनंद और प्रेम से बातचीत हुई थी। मैंने पूछा था कि तुम्हारे आगे क्या कार्यक्रम हैं? कहां मिलोगे? उन्होंने कहा, मैं पटना जा रहा हूं। कुछ दिन बाद कानपुर में मिलूंगा। पटना पहुंचने के पूर्व ही यह कांड हो गया। बाल्यकाल अर्थात् छात्र-जीवन से ही स्वयंसेवक के नाते जो अपने कर्तव्य का बोध प्राप्त कर लेते हैं और समग्र जीवन की शक्ति संघ-कार्यार्थ समर्पित करने वाले जो थोड़े से लोग रहते हैं, उनमें उनका प्रमुख स्थान था। संघ के स्वयंसेवक से अपेक्षा रहती है कि वह अपने अंदर स्वयंसेवक के सभी गुण कायम रखे, अपने संगठन का ध्यान रखे तथा उसके भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों की महत्ता को हृदय में जागृत रखकर उनमें सम्मिलित होता रहे और उसे यदि अन्य कोई दायित्व भी करने के लिए दिया जाए तो वह परिश्रम से निभाए, वह कार्य किसी भी क्षेत्र का क्यों ना हो। उनको

(दीनदयाल जी) को राजनीति में काम करने के लिए कहा गया और उन्होंने वह किया। कितनी योग्यता से किया, उसकी कल्पना कुछ लोगों को होगी; परंतु यदि यह कहा जाए कि अब देश में भारतीय जनसंघ के नाम से राजनीतिक संगठन देश में खड़ा है, वह उनकी योजनाबद्ध परिश्रम शीलता का ही परिणाम है, तो अत्युक्ति ना होगी। जनसंघ में बहुत से लोग बोलने वाले रहे, बहुत से दौड़-धूप करने वाले रहे, बहुत से केवल शोभा देने वाले रहे। परंतु नींव के पहले पत्थर से काम करके इतनी ऊंची मर्यादा तक शुरू करके इतनी ऊंची मर्यादा तक पहुंचाने का श्रेय यदि विशेषत: किसी व्यक्ति को देना पड़े तो उन्हीं को देना पड़ेगा।

वे उसके सर्वोच्च पद पर भी पहुंचे। यद्यपि मेरी इच्छा नहीं थी कि वे अध्यक्ष पद ग्रहण करें और उनकी भी इच्छा नहीं थी। मुझे उनसे कहना पड़ा था कि थोड़े समय के लिए, साल भर के लिए ही आपद्धर्म के रूप में ही अध्यक्ष पद स्वीकार कर लो। इसलिए उन्होंने इस पद को स्वीकार किया, नहीं तो वे स्वीकार करने वाले नहीं थे। उन्हें मान-मान्यता अथवा पद की इच्छा नहीं थी और इसलिए उनके मन में अध्यक्ष पद स्वीकार करने की बिल्कुल इच्छा नहीं थी। मैं भी नहीं चाहता था। परंतु किसी न किसी परिस्थिति के कारण मुझे भी एक प्रकार से बाध्य होकर उन्हें पद ग्रहण के लिए कहना पड़ा था और मेरे कहने के कारण, स्वयंसेवक जिस प्रकार आदेश-निर्देश का पालन करता है, उसी नियम के अनुसार उन्होंने उसका पालन किया।

"उनकी अध्यक्षता के समय थोड़े दिनों में ही जनमानस के ऊपर बड़ा अच्छा परिणाम दिखाई पड़ा। बड़े-बड़े विरोधी भी सोचने लगे कि अंततोगत्वा देश की बागडोर संभालने वाला यही राजनीतिक (जनसंघ का) कार्य है। कुछ लोग यह भी कहने लगे कि इसके पीछे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की जो शक्ति है, वह व्यक्ति के रूप में मूर्तिमान खड़ी है।

"ऐसा दिखाई देता है, जनसंघ का निर्माण कुछ बड़ी ही कठिन स्थिति में हुआ है। उसका भाग्य खराब है। पहले उसके अध्यक्ष डॉक्टर श्याम प्रसाद मुखर्जी थे, उनकी एक प्रकार से राजनीतिक हत्या हुई। फिर उसके बाद बड़े भाग्य से डॉ. रघुवीर प्राप्त हुए। वे भी बड़े योग्य पुरुष थे। उनके कारण विदेशों में भी इस राजनीति क्षेत्र का बोलबाला हो सकता था और प्रभाव निर्माण हो सकता था। किंतु थोड़े दिनों में उनका अपघात हो गया और इसके बाद सर्वांग परिपूर्ण कार्य करने वाला जो अध्यक्ष (दीनदयाल जी) प्राप्त हुआ, इस प्रकार चला गया।

मैं काशी गया था उनके शरीर को देखने के लिए विमान से शरीर को विदा करने के बाद यहां आया; परंतु मैंने आंसू नहीं बहाए। कुछ पता नहीं, लोगों ने मेरे बारे में क्या समझा होगा! अपने पुराने सुभाषितों में यह वचन आता है कि 'जो कार्यार्थी है, वह दु:ख और सुख दोनों को अवहेलित करके काम करता है- मनस्वी कार्यार्थी गणयति न दु:खं न च सुखं'। भगवद् कृपा से मेरे मन की शायद ऐसी ही कुछ स्थिति बन गई है और मैं उसको पचाकर चलने के लिए प्रस्तुत हुआ हूं। अब दूसरा कोई भी उतनी योग्यता से कार्य उठाने के लिए कोई आगे नहीं आएगा, ऐसी कोई बात नहीं है। कार्य बड़ा है, संगठन का कार्य है, अनेक कार्यकर्ताओं की परंपरा विद्यमान है, जो एक के बाद एक आगे आते रहेंगे। कोई स्थान रिक्त नहीं रहेगा- और मुझे पूर्ण आशा है कि ऐसा ही होगा। इस संबंध में अधिक नहीं बोलता। जितना बोलूं थोड़ा ही है। सहना तो पड़ेगा ही। "इतना बोलने के लिए भी मन के ऊपर नियंत्रण रखने में बहुत परिश्रम करना पड़ा। ईश्वर की कृपा से नियंत्रण रख सका। उसका परिणाम शरीर की थकावट के रूप में बहुत अधिक हुआ। मैं प्रत्यक्ष करुण दृश्य देख कर आया हूं, इसलिए सोचा कि इसका उल्लेख सबके सामने कर दूं। हममें से प्रत्येक अनुभव करें कि उनके जैसी सर्वांग परिपूर्ण योग्यताअपने अंदर आये। उनकी तरह दायित्व निभाने की योग्यता हर एक को बढ़ानी चाहिए। मेरे कहने का यह अर्थ नहीं लगाना चाहिए कि मैं सब लोगों को राजनीतिक क्षेत्र की ओर अपना झुकाव करने के लिए कह रहा हूं, झुकाव तो बिल्कुल होना ही नहीं चाहिए। जिस व्यक्ति का मैंने उल्लेख किया, उसका राज्य क्षेत्र की ओर झुकाव नहीं था। उन्होंने कई बार मुझे कहा कि आपने मुझे यह कहाँ डाल दिया? मुझे फिर से अपना प्रचारक का काम करने दें"। मैंने कहा; "भाई, तुम्हारे सिवा किसे डालें? जिसकी संगठन में इतनी अचल श्रद्धा और निष्ठा है, वही इस झमेले में रहकर कीचड़ में भी कीचड़ से अस्पृश्य रहकर सुचारू रूप से वहां की सफाई कर सकेगा, दूसरा कोई नहीं कर सकेगा"। इसलिए मैंने कहा कि राजनीतिक क्षेत्र की ओर अपना झुकाव करने के लिए मैंने किसी को नहीं कहा। - -**श्री माधव राव सदाशिव राव गोलवलकर, "श्रीगुरुजी"**

नंदा दीप बुझ गया, हमें अपने जीवन-दीप जलाकर अंधकार से लड़ना होगा। सूरज छिप गया, हमें तारों की छाया में अपना मार्ग ढूंढना होगा। हमारा मित्र, सखा, नेता और मार्गदर्शक चला गया। हमें उनकी पवित्री स्मृति को हृदय में संजोकर ध्येयपथ पर आगे बढ़ना होगा। दीनदयाल जी का जीवन एक समर्पित जीवन था। शरीर का कण-कण और जीवन का जीवन का क्षण-क्षण उन्होंने राष्ट्रदेव के चरणों में चढ़ा दिया। संपूर्ण देश उनका घर था, सारा समाज उनका परिवार। उनकी आंखों में एक ही सपना था, उनके जीवन का एक ही व्रत था।

"राजनीति उनके लिए साधन थी, साध्य नहीं। यह मार्ग था, मंजिल नहीं। वे राजनीति का आध्यात्मीकरण करना चाहते थे। वे भारत के उजज्वल अतीत से प्रेरणा लेते थे, उज्ज्वलतर भविष्य का निर्माण करना चाहते थे। उनकी आस्थाएं सदियों पुराने अक्षय राष्ट्र-जीवन की जड़ों से रस ग्रहण करती थीं, किंतु वे रूढ़ीवादी नहीं थे। भविष्य के निर्माण के लिए वे भारत को समृद्धिशाली आधुनिक राष्ट्र बनाने की कल्पना लेकर चले थे।

वे महान चिंतक थे। चिंतन के क्षेत्र में बंधे-बंधाए रास्ते से चलने के हामी नहीं थे। इसलिए उन्होंने भारतीय जनसंघ को ऐसे विकसित किया, जो अतीत की गौरव गरिमा को लेकर चलता है और आने वाले कल की चुनौती का सामना करने के लिए भी सन्नद्ध है। आज जनसंघ जो कुछ है, सब उन्हीं की देन है। उन्हें कभी किसी ने मोहित नहीं किया। वे संसद के सदस्य नहीं थे। लेकिन संसद सदस्यों के निर्माता थे। उन्होंने कभी पद नहीं चाहा। बड़ी मुश्किल से उन्हें अध्यक्ष पद का भार संभालने के लिए तैयार किया था। उन्होंने प्रेरणा दी कि चलो विंध्याचल के पार कन्याकुमारी पर, जहां भारत माता के चरणों को सिंधु धो रहा है, भारत की एकता का जागरण मंत्र फूंके। उनके नेतृत्व में हमने भारत की एकात्मता को गुंजाने का संकल्प लिया। कालीकट अधिवेशन हुआ। हम वहां गए। उनकी अध्यक्षता में अधिवेशन सफल हुआ। लोगों ने कहा कि जनसंघ ने कार्यसिद्धि का ऐतिहासिक दृश्य उपस्थित किया। जनता की आंखें आशा और विश्वास के साथ उनपर जा लगी थी। देश- विदेश के लोगों ने कहा कि कालीकट में जनसंघ ने नया रूप धारण किया है। परंतु जनसंघ ने नया रूप धारण नहीं किया, देखने वालों की आंखों में बदलाव आया था। उन्हीं आंखों में कुछ ऐसी आंखें थी, जिनमें पाप था, जलन थी, जिनमें हिंसा की चिंगारी सुलग रही थी। उन आँखों को यह दृश्य चुभा और उन्होंने आज पंडित दीनदयाल जी को हमसे विलग कर दिया। किन परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हुई, कोई विश्वासपूर्वक नहीं कह सकता। जांच हो रही है, किंतु जिस के इशारे पर लाखों लोग जान देने के लिए तैयार थे, उसे रात के अंधेरे में अपने अनुयायियों से दूर, देशवासियों से पृथक मौत की गोद में धकेल दिया। यह घाव सदा हरा रहेगा। यह कांटा हमारे हृदय में सदैव रहेगा। दीनदयाल जी जिस कार्य के लिए उन्होंने अपना जीवन दिया, उसीको पूर्ण करना है। उनका सपना अधूरा है, उनका कार्य भी अपूर्ण है। उनके जीवन पर किया गया आक्रमण राष्ट्रीयता पर आक्रमण है, उनके शरीर पर लगी चोटें लोकतंत्र पर किए गए प्रहार हैं। हम राष्ट्र विरोधियों और लोकतंत्र के शत्रुओं की इस चुनौती को

स्वीकार करते हैं। उपाध्याय जी को हमसे छीनकर जो लोग यह समझते हैं कि जनसंघ की प्रगति को अवरुद्ध कर देंगे, वह ना ही उपाध्याय जी को पहचान पाए और ना यही जानते हैं कि हम उनके अनुयायी किस मिट्टी के बने हैं। उपाध्याय जी का कार्य व्यक्तिनिष्ठ नहीं, तत्वनिष्ठ है। उन्होंने सदैव आदर्शवाद पर बल दिया और सिद्धांतों के लिए जीना सिखाया। उनके वियोग में व्यथित होकर ना हम अपने होशहवास गुम होने देंगे और न उनके देहावसान के दारुण दु:ख से बैठकर आततायियों को ही अपने ऊपर हावी होने देंगे। हमें स्वयं को दीनदयाल जी का योग्य उत्तराधिकारी सिद्ध करना है। हमें उनके ऋण को चुकाना है। आइए, दीनदयाल जी के रक्त की एक-एक बूंद को माथे का चंदन बना कर दी पथ पर अग्रसर हों, उस चिता से निकली हुई एक एक चिंगारी हृदय में धारण कर परिश्रम की पराकाष्ठा और प्रयासों की परिसीमा करें। इस नवदधीचि की अस्थियों का वज्र बनाकर असुरों पर टूट पड़ें।

दीनदयाल जी नहीं रहे किंतु उनका कार्य अभी शेष है। उनके शेष कार्य के लिए स्वयं को समर्पित कर हम उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

हम चुनौती स्वीकार करते हैं- अटल बिहारी वाजपेयी